बिहार विधान परिसद में भासन

श्री रामईश्वर सिंह M.L.C. के 10-12-1974 के बिहार विधान परिसद में मगही भासा के संबंध में रखल परस्ताव मगही भासा राज्य के प्रादेसिक भासा मगही के मान्यता देके इस्कूल से विस्वविद्यालय स्तर तक पाठ्यक्रम में सम्मिलित करे के सम्बन्ध में श्री रामईश्वर सिंह के एगो गैर-सरकारी परस्ताव।

भासन के अंस : श्री राम ईश्वर सिंह—"अध्यच्छ महोदय, हम ई प्रस्ताव करित ही कि ई बिहार विधान परिसद राज्य सरकार से अभिस्ताव करऽ हे कि मगही भासा के राज्य के प्रादेसिक भासा के मान्यता दे के इस्कूल से विस्वविद्यालय तक के पाठ्यक्रम में सामिल करल जाए।

अध्यच्छ महोदय, ई बहुत खुसी के बात हे कि आज जब हमनी मगही भासा के संबंध में ई तरह के परस्ताव उपस्थापित कर रहली हे तऽ माननीय मंतरी श्री रामाश्रय बाबू भी इहाँ उपस्थित हथ जे कि खुद्दे मगही भासा-भासी हथ। इनकरा समच्छ हम ई परस्ताव कर रहली हे, एकरा से भी हमरा बहुत खुसी हे। मगही भासा के संबंध में अपने के सामने जे कुछ प्रस्तुत करेला चाहऽ ही ऊ ई हे कि बिहार राज्य में बहुत सा छेतरीय भासा हे आउ ऊ छेतरीय भासा के होना भी स्वाभाविक हे। जउन तरह छोटानागपुर आउ संथाल परगना में भिन्न-भिन्न भासा-भासी लोग हथ जइसे-उराँव, मुंडा आउ संथाली भासा-भासी लोग हथ, ओही प्रकार बिहार राज्य में तीन छेतरीय भासा प्रधान हे। पहिला स्थान मैथिली के हे, दूसर स्थान भोजपुरी के आउ मगही के तीसर स्थान हे।

श्री जागेश्वर मंडल : आउ कोई भासा बिहार में नयँ हे?

श्री रामईश्वर सिंह : हम कहली हे तीन भासा परधान हे।

अध्यासीन सदस्य (श्री अरुण कुमार) : अउरो बोली हे।

श्री रामईश्वर सिंह : लेकिन परधान तीने भासा हे। जमुना बाबू पुछलन हे कि ई तीन भासा कउन-कउन हे। एकरा हम पहिले भी बता चुकली हे। एकरा में पहिला स्थान मैथिली के हे, दूसर स्थान भोजपुरी के हे, आउ तीसर स्थान मगही के हे। अध्यच्छ महोदय, भौगोलिक छेत्तर के हिसाब से हम तीन छेतरीय भासा के बिसलेसन कर देना चाहऽ ही। मैथिली के छेत्तर दरभंगा, पूर्णिया, सहरसा आउ भागलपुर के कुछ अंस हे।

श्री माहेश्वरी सिंह 'महेश'—अध्यच्छ महोदय, ई अप्पन बात कहथ, दूसर के बात काहे कहित हथ?

लेखक-परिचय

नाम : रामईश्वर सिंह

जनम : 1-1-1932

जनम-अस्थान : जलालपुर, दानापुर, पटना

पेसा : समाज-सेवा, राजनीति, पूर्व M.L.C.

ई सिच्छा-विकास आउ समाज-कल्यान पर बिहार विधान परिषद में सैकड़ो परस्ताव लयलन। ई अनेक सैच्छनिक संगठन में पदाधिकारी इया सदस्य के रूप में रहलन। खेल–कूद के अनेक संगठन के तरक्की ला काम करलन। टेबुल टेनिस के प्रति इनका जबरदस्त लगाव हल। महिला के फुटबॉल, क्रिकेट के आगे बढ़ावे ला आजीवन लगल रहलन।

मगध विस्वविद्यालय, पटना विस्वविद्यालय के सीनेट आ सिंडीकेट के सदस्य रहलन। ई विधान परिसद में बाढ़ राहत, सड़क निरमान, यातायात सुविधा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, पेयजल, कर्मचारी के माँग आउ खेलकूद आदि पर काफी जोरदार सवाल उठयलन।

बिहार विधान परिसद में 10–12–1974 में श्री रामईश्वर सिंह M.L.C. मगही भासा के प्रादेसिक भासा के मान्यता दे के इस्कूल से विस्वविद्यालय स्तर तक पाठयक्रम में सामिल करेला एगो गैर–सरकारी परस्ताव लयलन हल। ऊ भासन के इहाँ पाठ में सामिल करल गेल हे।

एकरा में ई बतावल गेल हे कि मगही भासा के पढ़ाई काहे जरूरी हे। संविधान में जिक्र कैल गेल हे कि लइकन के पढ़ाई प्राथमिक इस्कूल में ओकर मातृभासा में करल जाए। एही संदर्भ में ई भासन विधान परिसद में सदस्य लोग के बीच श्री रामईश्वर सिंह देलन ऊ हिन्दी भासन के मगही अनुवाद इहाँ देल गेल हे।

काम-काज जल्दी से निपटावे ला जनसेवक लोग के मिटिंग हो रहल हल। ऊ मिटिंग में एस. डी. ओ. साहब कुरसी पर आउ जनसेवक लोग दरी पर बइठल हलन। विनोबा जी सबके अपना दन्ने धेयान खींच के जोर से बोललन— 'एस.डी.ओ. साहब! ई देस अजाद हे इया गुलाम?'

एस.डी.ओ. साहब कहलन— 'अजाद'।

विनोबा जी कहलन— 'तूँ कुरसी छोड़ के दरी पर बइठऽ! अगरचे दरी पर बइठे में लजा हऽ, तब हमनियों सब ला कुरसी के इन्तजाम करऽ! हम भी सरकार के नौकर, तूँ भी सरकार के नौकर।'

जब एस. डी. ओ. साहब कुरसी छोड़ के दरी पर बइठ गेलन, तबहिएँ सरकारी काम सुरू भेल।

विनोबा जी जब भासन देवे लगऽ हथ, तब मिनिस्टर आउ अफसर लोग के बखिया खूब उघेरऽ हथ। एहि चलते ई कानून के तहत गिरफ्तार होके कई महीना जेल के हवा खैलन हे। जेल में भी ई खेले करते रहलन। जेल के नाली आउ सौचालय नरक के गंदगी के मात कर रहल हल। केकरो से बिना कहले सुनले ई ऊ सब्भे बदबूदार जगह के साफ-सुथरा करे ला कमर कस लेलन।

इनकर सफाई के काम देख के जेलर आउ कैदी खुस हो गेलन। एक दिन जेल-मैनुअल के मोताबिक सब्भे कैदी के भोजन-देवे ला विनोबा जी अनसन कर देलन। जेल अधिच्छक मजबूर होके विनोबा जी के माँग मान लेलन। जहिना तक विनोबा जी जेल में रहलन सब्भे कैदी के भरपेट भोजन मिलल।

जेल से बाहर निकलला के बाद इनका पर से सरकार मुकदमा वापस ले लेलक। जेतना दिन ई जेल में रहलन, ओतना दिन के वेतन से इस्कूल के छत ढालेला लोहा आउ सिमेंट खरीद लेलन। ढलाई के काम में ढेर अदमी के जरूरत हल। ऊ भुईटोली में मुसहर लोग से कहलन— ''तोहनी सब खटिया पर टाँग के हमरा 'राम नाम सत हे'—कहइत गाँव में ले चल। कोई पूछे तो कहिहें कि विनोबा जी लूक ~गे से मर गेलन हे।''

मुसहर लोग विनोबा जी के कहे के मोताबिक काम कैलन। सउँसे गाँव में इनकर मौत के खबर फैल गेल। केते औरत अपन-अपन चूल्हा के आग बुता के

इनकर अंतिम दरसन करे ला दउड़ गेलन। दू-चार लोग आँख में लोर भर के छातिओ पीटे लगलन। इस्कूल के मैदान देखताहर से खचाखच भर गेल। विनोबा जी साँस रोक के मइल-कुचइल मोटिया के चद्दर ओढ़ले खटिया पर चिताने पड़ल हलन।

भगत जी जब चद्दर हटैलन तब ई धड़फड़ा के खड़ा होके कहे लगलन—'एतवार तक इस्कूल के छत के ढलाई हो जाय के चाहीं। एहि ला हमरा ई नाटक करे पड़ल हे। तोहनी सब इस्कूल में एक दिन सरमदान करऽ। जउन अदमी काम न कर सकऽ हे, ऊ एक दिन के मजूरी देके छत ढाले में सहयोग करे।' विनोबा जी के अपील सुन के गाँव के लोग चूँटी-पिपरी नियन जुट गेलन आउ इस्कूल के पाँचो कोठरी एक्के दिन में ढला गेल।

दू दसक पहिले पंचायत में पदारूढ़ मुखिया के चुनौती देवे के काम खुदकुसी समझल जा हल। विनोबा जी बाघ जोरे एगो बकरी के भिड़ा देलन। ऊ इलाका में केतना मतदाता एतना डरफोंक हलन कि बूथ पर जाके ऊ सबके मतदान करे में पसेना छूटे लगऽ हल। विनोबा जी पंचायत में कैम्प गाड़ के तन-मन आउ धन से अप्पन उम्मीदवार के परचार काज में जुट गेलन। इनका ला जेठ के दुपहरिया चइत के इँजोरिया बन गेल। जइसे-जइसे चुनाव के तारीख निकट आयल, पदारूढ़ मुखिया के गोर के जमीन खिसक गेल।

विनोबा जी के चालीस गो चुनल जवान पंचायत में ई तरह घूम रहलन हल जइसे कठनो चुनाव न, हमलावर से जुध के तइयारी हो रहल हे। इनकर उम्मीदवार चुनाव जीत गेलन। किरिया-कसम तो नयका मुखिया खयलन मगर फूल के माला विनोबेजी पर चढ़ल। एतने न, ई अप्पन पड़ोसी पंचायत के एगो महिलो के मुखिया बनावे में सराहनीय भूमिका निबाहलन।

विनोबा जी के पीठासीन पदाधिकारी बने के अनेक बार मौका मिलल हे। बूथ पर सैकड़ो अदमी दोसर के नाम पर वोट देवे आ रहलन हे। विनाबा जी पीपर के डाँढ़ आउ पानी से भरल पीतर के लोटा देके ऊ सबसे कसम खिला रहलन हे—मतदाता सूची में लिखल नामधारी अदमी के हम बेटा, बेटी इया घरनी ही। झूठ बोल के वोट देवे पर हम्मर देह में कोढ़ी फूट जाय। पोलिंग एजेन्ट विरोध कर

रहलन हे, मगर विनोबा जी ओकर बात के अनसुनी कर दे हथ। जब नकली मतदाता कतार से बाहर हो जाहे, तबहिएँ मतदान के काम सुरू होवऽ हे। ई अस्थानीय रंगदार के धमकी से रत्ती भर भी न डेरा रहलन हे।

विनोबा जी अराजपतरित कर्मचारी संघ के जुझारू नेता हो गेलन हे। एही से इनकर सोर्स अफसर आउ मिनिस्टर तक पहुँच गेल हे। ई मिनिस्टर हीं डाली न लगावऽ हथ, अफसर हीं घूस न पहुँचावऽ हथ, बाकि समय-समय पर ऊ सब के सलामी जरूर दागऽ हथ। जब तक काम न होय, ओकर इयाद करावे से ई बाज न आवऽ हथ। काम करावे के इनकर ढंग निराला हे। ढेर अफसर इनका से डरबो करऽ हथ। अफसर लोग के कहनाम हे—'ई हल्ला-गुदाल करे वाला अदमी हे। एक्कर बोली में बम हे। बम कब फूट जात, ई कहल न जा सकऽ हे।' इनकर बोली सुन के ढेर अधिकारी अप्पन चैम्बर में घुस जा हथ। ई केत्ते अफसर के मेहरारू से बिना उपहारे खाली बात बनाके खुस करके औफिस में महीनन से अँटकल बिल पास करैलन हे।

विनोबा जी के अप्पन मेहरारू से बढ़िया ताल-मेल न हे। ई बेचारी के बनरिया नियन नचयते रहऽ हथ। कहिनो ई होस्टल के दाई बनल हथ, तो कहिनो केकरो भन्सा के सीधमाइन। जात-परजात, भुइयाँ-चमार के भेद-भाव भुला के ई सेवा में जुटल रहऽ हथ। पति के बतावल काम करे में इनका सन्तोस मिलऽ हे। अइसे तो विनोबा जी के लर-जर कद्दू के लत्तर नियन छितरायल हे मगर परिवार में इनकर पत्नी के छोड़ के आउ कउनो न हे।

विनोबा जी चाहथ तो अप्पन मेहरारू के अराम दे सकऽ हथ। मगर इनकर कहनाम हे—'कमनिस्ट देस में राष्ट्रपति के पत्नी भी सड़क पर झाड़ू लगावऽ हे। का हम्मर मेहरारू केकरो रसोइओ बना के न खिला सकऽ हे?' विनोबा जी के घरनी अप्पन पति के कहना जरूर मानऽ हथ, मगर भीतर से भिनभिनायल रहऽ हथ। एक्को संतान न रहे से इनकर हिरदय पीड़ा के भंडार बनल हे, मगर भर हाथ चूड़ी, लिलार में टिकुली आउ ठोर पर लजायल हँसी देख के कउनो कह न सकऽ हथ कि इनकर मन दुखी हे।

विनोबा जी के व्यक्तित्व में चार चाँद लगावेवला गुन समाजसेवा हे। कउनो घायल पर नजर पड़इत ई सहानुभूति जरूर देखयतन आउ केकरो घर जरइत देख

के जान-माल के हिफाजत करेला आनन-फानन आग में कूद जयतन। कउनो ट्रेड यूनियन हो, सबके तहे दिल से समरथन देवे ला ई हर-हमेसे तइयार रहऽ हथ। इनकर नस-नस में बिजुरी के फुरती हे। ई रिक्सा चलावे में माहिर हथ। चाहे जेठ के लहकल दुपहरिया होवे इया भादो के घुप अनहरिया, कनहूँ जाये में देरी न करऽ हथ। गाँव से लेके पटना, दिल्ली से लेके कलकत्ता तक ट्रेड यूनियन के सम्मेलन में इनकर खोज होवऽ हे। अब तो साहित्यिक आयोजन में भी दिलचस्पी लेवे लगलन हे।

विनोबा जी के दिमाग जब ठीक रहऽ हे तब इनका में ढेर गुन लउकऽ हे, मगर माथा के एस्क्रू ढीला हो गेला पर ई खूँखार अदमी बन जा हथ। केकरा ई गरिया देतन, केकरा से मारा-पीटी कर लेतन—एकर लेखा-जोखा रखना कठिन हे। एक दिन थाना परभारी के सामने एगो अस्थानीय नेता के छौ-फीटा केतारी से सट्-सट् मार के विनोबा जी कह रहलन हल—'तूँ हमरा मुदाले बना के केस कर। गोवाही में दरोगा जी के रख।'

नेताजी के ठकमुरकी मार देलक हल। उनका समझ में आइए न रहल हल कि हम का करूँ? मारइत-मारइत जब केतारी टूट गेल तब विनोबा जी कहलन-''अप्पन कुटुम्ब के लोग लड्डू फेंक के मारऽ हे। हमहूँ तोरा केतारी से मार रहली हे, ले केतारी चीभ!'' ई नौटंकी देख के थाना परभारी हँसे लगलन।

एक दफे जब त्रिवेन्द्रम में कर्मचारी महासंघ के अखिल भारतीय सम्मेलन होल हल, तब उहाँ के सब पेपर में उनकर फोटो निकलल। फोटो देख के कुछ दोस्त लोग व्यंग कैलन कि दाढ़ी बढ़ावे से फोटो छपऽहे। ओही दिन ऊ दाढ़ी आउ बाल मुड़वा लेलन।

नौकरी से रिटायर होला के बाद विनोबा जी अप्पन घरुआरी जौरे अप्पन इलाका छोड़ के रमता जोगी बहता पानी हो गेलन हे।

अभ्यास-प्रश्न

मौखिक :

1. विनोबा जी के असली नाम का हे?
2. विनोबा जी के कउन रिस्तेदार में टंट-घंट पसर गेल?

3. 'कॉके रिटरन' के माने का होवऽ हे?

4. विनोबा जी कउन पद पर नौकरी करऽ हलन?

5. विनोबा जी दरी पर बइठेला किनका कहलन?

6. मरल अदमी के चार कंधा पर लादला के बाद कउन बात बार-बार दोहरावल जाहे?

7. 'एस्कू ढीला' होयल के माने बतावऽ!

8. अप्पन कुटुम्ब के कउची फेंक के मारल जाहे?

लिखित :

1. विनोबा जी के नाम विनोबा जी काहे पड़ल?

2. विनोबा जी किनकर झगड़ा मेंटावे ला अनसन कैलन आउ कउन सर्त पर अनसन तोड़लन?

3. मिठाई के दोकनदार से विनोबा जी का कहलन?

4. सैकड़न गाँव में विनोबा जी कउन-कउन काम करवैलन?

5. खाय-पीये के मामला में विनोबा जी कउन-कउन नियम के पालन करऽ हथ?

6. विनोबा जी जेल में कउन अइसन काम कैलन कि ओकरा से जेल के बेवस्था में सुधार हो गेल?

7. विनोबा जी के मौत के खबर सुन के गाँव में का असर पड़ल?

8. रंथी पर से उठ के विनोबा जी का कहलन?

9. विनोबा जी के मेहरारू का करऽ हथ?

10. विनोबा जी के मेहरारू के कउन रूप देख के कोई ई न कह सके कि ई दुखी हथ?

11. विनोबाजी के समाज सेवा के कुछ उदाहरन देवल जाय।

12. आजकल विनोबा जी आउ कउन काम में दिलचस्पी लेवे लगलन हे?

13. सपरसंग व्याख्या करऽ :

(क) लऽ ई छूरी। हम्मर पेट चीर के अप्पन सब्भे लड्डू निकाल लऽ!

(ख) भगवान राम भी तो सबरी के जूठा बेर खैलन हल।

(ग) ई बेचारी के बनरिया नियन नचयते रहऽ हथ। कहिनो ई होस्टल के दाई बनल हथ, तो कहिनो केकरो भंसा के सीधमाइन।

(घ) तूँ हमरा मुदाले बनाके केस करऽ, गोवाही में दरोगा जी के रखऽ।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल मुहावरा-कहाउत के अर्थ लिखके वाक्य में परयोग करऽ :

(क) टंट–घंट पसरना

(ख) तीन तेरह करना

(ग) चूँटी–पिपरी नियर जुटान

(घ) बनरिया नियन नचाना

2. 'सबद चित्र' विधा के विसेसता बतावऽ।

3. पाठ में आयल दू गो अलंकार वाला पंक्ति बतावऽ।

4. नीचे लिखल सबद के उल्टा सबद बतावऽ :

नरक, आग, साफ, डरफोंक, महिला

योग्यता-विस्तार :

1. 'विनोबा जी' अइसन तोर नजर में कोई अदमी हे तो ओकरा पर एगो कहानी लिखऽ।

2. यदि तूँ 'विनोबा जी' के अस्थान पर रहितऽ त का करितऽ ?

सब्दार्थ :

दहकइत इँगोरा	:	जरइत आग
बतकुच्चन	:	विवाद
फह–फह उज्जर	:	एकदम सफेद
देखताहर	:	देखेवाला

मइल-कुचइल	:	एकदम गंदा
पदारूढ़	:	पद पर बइठल
खुदकुसी	:	आत्महत्या
जुझारू	:	लड़ाकू
परजात	:	दोसर जात के
लर-जर	:	रिस्तेदार